नीतिवचन 21:3 का सही अर्थ समझें — “धर्म और न्याय करना यहोवा को बलि चढ़ाने से अधिक प्रिय है।”

प्रश्न:

नीतिवचन 21:3 का क्या अर्थ है?

नीतिवचन 21:3 (ERV-HI)
“धर्म और न्याय करना यहोवा को बलि चढ़ाने से अधिक प्रिय
है।”

उत्तर:

यह पद हमें यह सिखाता है कि ईश्वर के लिए क्या सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।
ईश्वर को धार्मिक जीवन, न्याय, दया और सच्चाई के साथ चलना, हमारे बाहरी धार्मिक कर्मों और बलिदानों से कहीं अधिक प्रिय है। जब हम अपने जीवन में धर्मपूर्वक, न्यायपूर्वक और दूसरों के साथ प्रेम और सहानुभूति से रहते हैं, तो यह ईश्वर के लिए किसी भी धार्मिक अनुष्ठान या बलि से अधिक मूल्यवान होता है।

इसका अर्थ यह है कि ईश्वर हमारी भक्ति या हमारे बाहरी धार्मिक कर्मों से अधिक हमारे दिल और आचरण को देखता है। बलि यहाँ उन सभी

नीतिवचन 21:3 का सही अर्थ समझें — “धर्म और न्याय करना यहोवा
को बलि चढ़ाने से अधिक प्रिय है।”

धार्मिक कार्यों का प्रतीक है जो हम ईश्वर के लिए करते हैं — जैसे कि उपासना, दान, उपवास, प्रार्थना, प्रचार, स्तुति गीत आदि। ये सभी अच्छे कार्य हैं, परन्तु ईश्वर चाहता है कि हम पहले उसकी आज्ञाओं के अनुसार जीवन जिएँ और दूसरों के साथ न्यायपूर्वक व्यवहार करें। तभी हमारे ये कार्य उसके लिए स्वीकार्य होंगे।

इसका यह अर्थ नहीं है कि ईश्वर बलि या उपासना को नापसंद करता है। नहीं, परन्तु ये सभी कार्य उस आज्ञाकारी जीवन के फलस्वरूप होने चाहिए जो ईश्वर को प्रसन्न करता है। यदि हमारा जीवन धर्म और न्याय में नहीं है, तो हमारे ये बाहरी कर्म उसके लिए व्यर्थ हो जाते हैं।

यह सत्य पूरे पवित्र शास्त्र में बार-बार दोहराया गया है। जब शाऊल ने आज्ञा उल्लंघन किया, तब शमूएल भविष्यद्वक्ता ने उससे कहा:

1 शमूएल 15:22 (ERV-HI)
“शमूएल ने कहा, क्या यहोवा होमबलि और मेलबलि से उतना ही प्रसन्न होता है, जितना कि यहोवा की बात मानने से होता है? सुन, आज्ञा मानना बलिदान से उत्तम है, और बातें ध्यान से सुनना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है।”

नीतिवचन 21:3 का सही अर्थ समझें — “धर्म और न्याय करना यहोवा को बलि चढ़ाने से अधिक प्रिय है।”

मीकाह भविष्यद्वक्ता भी यही सत्य सिखाते हैं:

मीका 6:6-8 (ERV-HI)
“मैं यहोवा के सामने कैसे आऊँ? और सर्वोच्च परमेश्वर के
सामने झुककर क्या लाऊँ? क्या मैं होमबलि और एक वर्ष के
बछड़े के साथ उसके सामने आऊँ?
क्या यहोवा हजारों मेढ़ों से, या अनगिनत तेल की धाराओं से प्रसन्न होगा? क्या मैं अपने अपराध के लिए अपने पहलौठे को, अपने पाप के लिए अपने ही शरीर के फल को दूँ?”
“हे मनुष्य, उसने तुझे बता दिया है कि अच्छा क्या है; और
यहोवा तुझसे क्या चाहता है? केवल यही कि तू न्याय करे, कृपा
से प्रीति रखे और अपने परमेश्वर के साथ नम्रतापूर्वक चले।”

यशायाह भविष्यद्वक्ता ने भी उन लोगों को डांटा जो पाप में जीते हुए भी बलिदान चढ़ाते थे:

यशायाह 1:11-17 (ERV-HI)
“यहोवा कहता है, तुम्हारे बहुत से बलिदानों से मुझे क्या
लाभ? मैं मेढ़ों के होमबलि और मोटे पशुओं की चर्बी से तृप्त हूँ; और बछड़े या भेड़ या बकरों के लहू से मुझे प्रसन्नता नहीं।
जब तुम मेरे सामने आने के लिए आते हो, तो किसने तुमसे यह

नीतिवचन 21:3 का सही अर्थ समझें — “धर्म और न्याय करना यहोवा
को बलि चढ़ाने से अधिक प्रिय है।”

माँगा कि तुम मेरे आँगन को रौंदो?
व्यर्थ के अन्नबलि मत लाओ; धूप मेरे लिए घृणित है…
धो लो, अपने आप को शुद्ध करो; अपनी बुराई के कामों को मेरी दृष्टि से दूर करो; बुराई करना छोड़ दो।
भलाई करना सीखो, न्याय के पीछे चलो, उत्पीड़ित का उद्धार
करो, अनाथ का न्याय करो, विधवा के लिये वकालत करो।”

आत्म-परीक्षण के लिए कुछ प्रश्न:

इसलिए हमें स्वयं से पूछना चाहिए:

क्या मैं दूसरों के साथ न्यायपूर्वक और प्रेमपूर्वक व्यवहार कर रहा हूँ?

क्या मैं नम्रता से अपने परमेश्वर के साथ चल रहा हूँ?

क्या मैं धार्मिक अनुष्ठानों से अधिक ईश्वर की आज्ञा मानता हूँ?

- □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□?

□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□

□□□□□□□□:

□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ — □□□□, □□□, □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□

□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□
□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□

□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□, □□ □□ □□:□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□

□□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□:

□

https://chat.whatsapp.com/L3ysoFZcz058XCX9oLvKL1?s=cl&p=a&mlu=4&ilr=4

□ □□□□□□ □□□□: +255693036618 □□ +255789001312

□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□

Share on:
WhatsApp